पसिया साग

मरकट्टा नांव कर अक गांव राहय। उंहा बतिया नांव कर अक बैगिन राहय। ओखर अक बटी राहय अउर ओखर नांव रतिया राहय। उन अपन गांव म खुसी खुसी राहंय। अपन कमावैं अउर खावैं। इन दुनोझन ले पसिया साग खायके बेझा सउक राहय।

अक दिन बतिया अपन काम कर कारन दुसर सहर गईस। फेर सांज के ओ लवटिस तो अपन बेटी ले कथै,''बाई, आज मै बेझा रेंगेहंव। अउर आज मै लट्ट गैहंव। तै मोय पानी पिया अउर मोर नाने जरासिन पासिया साग रांधके खवा।'' तो रतिया कथै,''हव।'' फेर रतिया रंधनाई खोली म गईस अउर रांधीस।

लेखक: हाबिल मेरावी